ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-7* September- 2020
Innovation The Research Concept

जनाकिंकी के ग्रामीण सामाजिक पक्ष का विश्लेषण (जिला– भिण्ड के विशेष सन्दर्भ में)

Analysis of The Rural Social Aspect of Janakinki (With Special Reference To District-Bhind)

Paper Submission: 15/09/2020, Date of Acceptance: 25/09/2020, Date of Publication: 26/09/2020

कौशलेन्द्र सिंह भदौरिया
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
ऋषिश्वर महाविद्यालय,
फूप, भिण्ड, मध्य प्रदेश, भारत

राजकुमार सिंह तोमर
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, अम्बाह, मुरैना,
मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज विहीन मानव की कल्पना नही की जा सकती । उसमें अपने साथियों के साथ सामान्य रुप से जीवन व्यतीत करने की क्षमता पायी जाती है। मनुष्य का प्रारंभ से लेकर आज तक का इतिहास बताता है कि वह समूह या समाज में ही रहता आया है। सामूहिकता उसका विशेष गुण है। वह मानव समूह जो एक–दूसरे के साथ अनुकूलन कर जीवन–यापन करता है, समाज कहलाता है। मानव समाज में रहकर ही अपना व अपने समाज का विकास करता है। '' जहॉ मानव जीवन है, वहॉ समाज भी है'' यह कथन समाज की सार्थकता को स्पष्ट करता है। समाज सामाजिक सम्बधों की एक जटिल व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रुप में प्रायः एक–दूसरे पर आश्रित रहता है। अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड की सामाजिक पृष्ठ भूमि में भी निरन्तर परिवर्तन देखने को मिलता है। जिन्हैं प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है।

Human is a social animal. A human devoid of society cannot be imagined. It has the ability to lead a normal life with its peers. The history of man from the beginning to the present day shows that he has lived in a group or society. Collectivity is its special quality. The human group who adapt and live with each other is called society. Human beings develop their own and their society only by staying in society. "Where there is human life, there is also society". This statement explains the meaning of society. Society is a complex system of social relations, under which every person is often dependent on each other in some form. Constant changes are also seen in the social background of the study area Bhind. Who have tried to demonstrate.

मुख्य शब्द : समाज, परिवार, जाति वर्ग, मानव, जनांकिकी, जनसंख्या, ग्रामीण।

Society, Family, Caste Class, Human, Demographic, Population, Rural.

प्रस्तावना

समाज एक व्यवस्था है, इस व्यवस्था का निर्माण एक से अधिक व्यक्तियों के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों के संगठन के फलस्वरूप होता है। यह समाज, मानव की सबसे बडी उपलब्धि है। सामान्यतः समाज मानव अथवा व्यक्तियों के सम्बन्धों का जाल कहा जा सकता है, क्योंकि मानव को एक सामाजिक प्राणी की संज्ञा दी जाती है। व्यक्ति की आवश्यकतायें ही मानव को सामाजिक प्राणी की संज्ञा प्रदान करती हैं। इस प्रकार सम्बन्ध व आवश्यकता पूर्ति की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप ही समाज का सृजन होता है। वर्तमान भारतीय जनगणना रिर्पोट में वर्णित समाज को चार वर्गों में रखा गया है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र में शोधार्थीद्वय द्वारा जनसख्या सम्बन्धी जनाकिंकी के ग्रामीण सामाजिक पक्ष का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से भिण्ड मध्य भारत का एक जिला था। 1 नवम्बर 1956 को यह नए राज्य मध्य प्रदेश का एक जिला बन गया। जनाकिंकी का भौगोलिक वातावरण से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। जनाकिंकी भौगोलिक वातावरण के प्रत्येक तत्व से प्रभावित होती है।

अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड मध्यप्रदेश राज्य की उत्तरी सीमा पर स्थित है। जिले की उत्तर–पूर्वी सीमा मध्यप्रदेश राज्य को उत्तर प्रदेश राज्य से अलग करती है। इसके पश्चिम में मुरेना जिला, दक्षिण में ग्वालियर जिला तथा जिला दतिया, जिले की सीमा को स्पर्श करते हैं। भिण्ड जिले का कुल क्षेत्रफल 4459 वर्ग किलो मीटर है जबकि जिले का कुल ग्रामीण क्षेत्रफल 4246.81 वर्ग किलो मीटर (ग्रामीण धरातल पत्रकों के आधार पर) है। जिले की उत्तर–दक्षिण लम्बाई 101 किलो मीटर एवं पूर्व–पश्चिम चौडाई 89 किलो मीटर है। अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड का ज्यामितीय विस्तार 25^0 55′ से 26^0 48′ उत्तरी अक्षांश एंव 78^0 12′ से 79^0 05′ पूर्वी देशान्तर के मध्य है।

अध्ययन क्षेत्र की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 152–183 मीटर के मध्य है। भू–आकृतिक दृष्टि से यह जिला एक मैदानी क्षेत्र है जो, वस्तुतः गंगा–यमुना मैदान का ही विस्तार है। यहाँ पाँच नदियाँ चम्बल, क्वारी, पहुज, बैसली एवं सिंध प्रवाहित होती हैं। जिले में महाद्वीपीय जलवायु का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में अधिक गर्मी व शीत ऋतु में अधिक सर्दी पडती है। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में अधिकतम औसतन तापमान 48^0 से.ग्रे. तथा शीत ऋतु में न्यूनतम औसतन तापमान 7^0 से. ग्रे. अकिंत किया गया। यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 827 मि. मी.(वर्ष 2011) अकिंत की गई।

जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड की कुल जनसंख्या 1703005 निवास करती है। जबकि यहाँ की कुल ग्रामीण जनसंख्या 1270083 व्यक्ति निवास करती है। प्रशासनिक दृष्टि से जिले में अटेर, भिण्ड, मेहगांव, गोहद, गोरमी, रौन, मिहोना व लहार तहसीलें हैं।

अध्ययन का उद्देश्य एवं संकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन, अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड की जनाकिंकी के ग्रामीण सामाजिक पक्ष का बोध कराने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण सामाजिक विविधता को स्पष्ट करना है, साथ ही सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति को प्रदर्शित करना है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों को निम्नलिखित संकल्पनाओं के आधार पर प्राप्त करने का प्रयास किया गया है–

1. व्यक्तियों से परिवार व परिवारों से समाज का सृजन होता है
2. सामाजिक संरचना से किसी क्षेत्र के सांस्कृतिक विन्यास स्वरूप परिलक्षित होता है।

शोध विधितंत्र

सर्वप्रथम शोधार्थीद्वय द्वारा समस्त अध्ययन क्षेत्र का प्रारंभिक अवलोकनात्मक सर्वेक्षण किया गया। तत्पश्चात अध्ययन क्षेत्र की इकाईयों के सूक्ष्म प्रतिदर्श अध्ययन हेतु यादृच्छिक देवनिदर्श पद्धति से क्षेत्र एवं ग्राम चयनित किये गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों ही प्रकार के आँकडों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकडों का संकलन व्यक्तिगत सर्वेक्षण के द्वारा किया गया है। द्वितीयक आँकडों का संकलन विविध शासकीय, अर्द्धशासकीय, अशासकीय संस्थाओं द्वारा प्रकाशित संमक पुस्तिकाओं से किया गया है। सर्वेक्षण हेतु अनुसूची एवं प्रश्नावली तैयार कर प्रतिदर्श चयनित किए गए हैं तथा ग्रामीणों, पंच, सरपंचों, पटेलों व पटवारियों से साक्षात्कार कर किया गया है। संकलित संमकों का सांख्यिकीय विधि से सारणीयन व विश्लेषण कर परिणाम ज्ञात किए गए हैं तथा शोध पत्र को सरल व बोधगम्य बनाने हेतु यथा स्थान रेखांकन किया गया।

ग्रामीण सामाजिक पक्ष

अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड में निवसित ग्रामीण समाजों में प्रतिस्पर्धा व संर्घष दृष्टिगोचर होता है। जिसके परिणाम स्वरूप इन समाजों की पहचान प्रथक–प्रथक रूप में सरलता से की जा सकती है। प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचना में गाँव एक सम्पूर्ण सामाजिक इकाई के रूप में अन्योंन्याश्रित जाति–कर्म व्यवस्था से निवसित थे, लेकिन वर्तमान में जाति–कर्म व्यवस्था संकुचित अवस्था में पहुँच चुकी है। अध्ययन क्षेत्र की जनाकिंकी के सामाजिक पक्ष को निम्न बिन्दिुओं के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

ग्रामीण जाति वर्ग संरचना

वर्तमान परिस्थितियों में प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं ने उसे समाज के मध्य रहने के लिए विवश कर दिया है। समाज के मध्य ही वह स्वंय को सुरक्षित महसूस करते हुये वह अपना व अपने परिवार, समाज को संगठित व विकसित करने का प्रयास करता है। यद्यपि प्रत्येक गाँव में एक से अधिक जातियों के लोग निवास करते हैं, लेकिन भारतीय जनगणना के अन्तर्गत इन समस्त जातियों को अलग–अलग वर्गों में विभक्त कर विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया जाता है, जिससे प्रत्येक पिछडे समाज को समानता प्रदान की जा सके। अतः यहाँ ग्रामीण समाज को जनगणना में वर्णित जाति वर्ग के अनुरूप प्रस्तुत कर विश्लेषण किया गया है।

सारणी क्रं.–1

ग्रामीण जाति वर्ग संरचना जिला–भिण्ड

क्र.	जाति वर्ग	जनसंख्या	जनसंख्या प्रतिशत में
1	सामान्य	821589	64.6
2	पिछडा वर्ग	162570	12.89
3	अनुसूचित जाति	284499	22.4
4	अनुसूचित जनजाति	1425	0.11
	योग	1270083	100

स्रोतः– जिला जनगणना पुस्तिका 2011 जिला भिण्ड एवं व्यक्तिगत सर्वेक्षण

सारणी क्रं.–1 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड में कुल ग्रामीण जनसंख्या 1270083 में से सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या (64.6 प्रतिशत) सामान्य जाति वर्ग की निवास करती है, जबकि न्यूनतम ग्रामीण जनसंख्या (0.11 प्रतिशत) अनुसूचित जनजाति की अंकित की गयी। अन्य वर्गों में यहाँ क्रमशः 22.4 व 12.89 प्रतिशत अनुसूचित जाति व पिछडा वर्ग की जनसंख्या

निवास करती है। ग्रामीण जाति वर्ग संरचना के साथ–साथ जनांकिकी के सामाजिक पक्ष को पारिवारिक स्वरूप भी प्रभावित करता है।

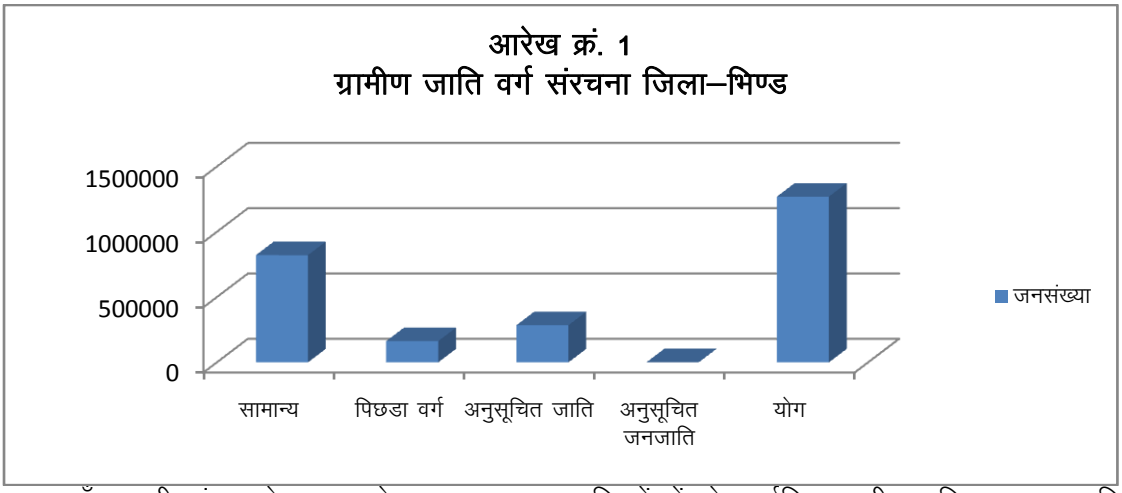

अतः यहाँ सारणी क्रं. 2 के माध्यम से अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण पारिवारिक स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

सारणी क्रं.–2
ग्रामीण परिवारों का स्वरूप जिला–भिण्ड

क्रं.	परिवार का प्रकार	परिवारों की कुल संख्या	परिवारों का प्रतिशत
1	संयुक्त	69544	30.55
2	मिश्रित	83666	36.76
3	एकाकी	74435	32.69
	योग	227645	100.00

स्रोतः– व्यक्तिगत सर्वेक्षण

सारणी क्रं.–2 से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड में निवासरत ग्रामीण परिवारों के स्वरूप में विविधता परिलक्षित होती है। यहाँ निवसित कुल 227645 परिवारों में से सर्वाधिक ग्रामीण परिवार 30.55 प्रतिशत संयुक्त परिवारों की श्रेणी में अंकित किये गये, जबकि न्यूनतम ग्रामीण परिवार 32.69 प्रतिशत एकाकी परिवार की श्रेणी में निवासरत हैं तथा 36.76 प्रतिशत ग्रामीण परिवार, मिश्रित परिवार की श्रेणी में निवास करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीण संयुक्त परिवारों में सभी पारिवारिक सदस्य एक ही रसोई का बना हुआ भोजन करते हैं तथा इनके संयुक्त परिवार में एक से अधिक पीढी के व्यक्ति निवास करते हैं, जबकि मिश्रित परिवार वह स्वरूप है, जिसमें एक से अधिक पीढी के व्यक्ति निवास करते हैं, लेकिन इन सभी परिवारों का भोजन अलग–अलग रसोई में पकाया जाता है तथा इस परिवार के सदस्य एक आवास में ही रहते हैं व आवास का प्रवेश द्वार एवं निकास द्वार एक ही रहता है।

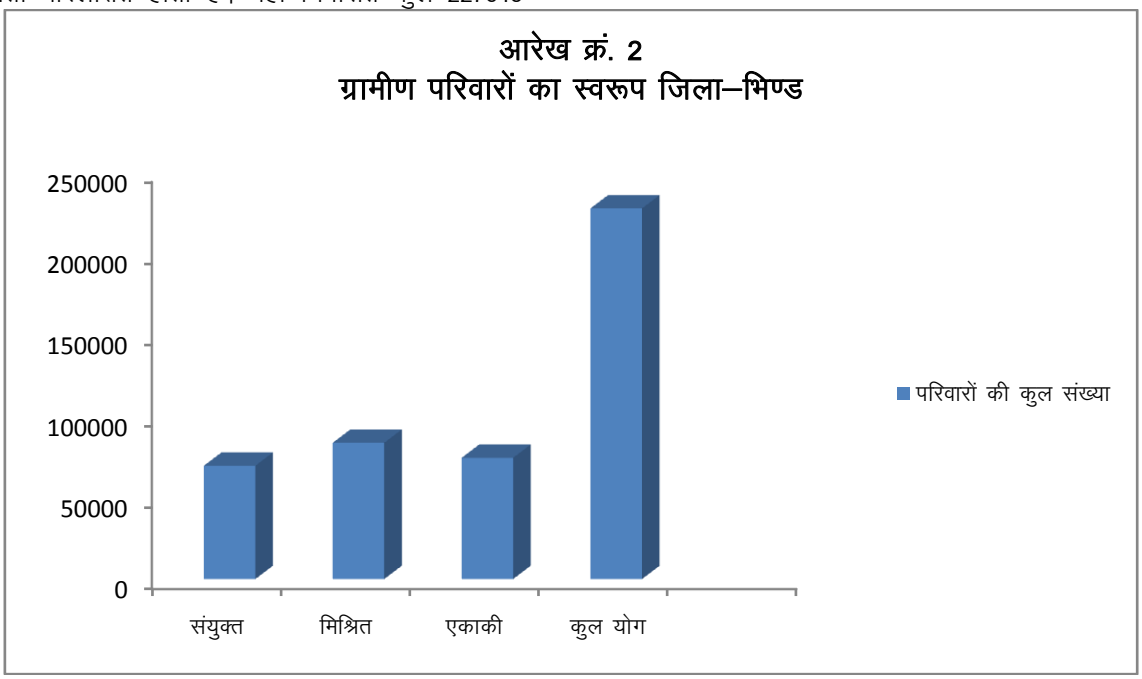

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण एकाकी परिवारों के सदस्य की पहचान सीमित सदस्य अर्थात माता–पिता व उनके बच्चों से स्पष्ट परिलक्षित होती है। इस प्रकार के परिवारों में निवास करने वाले लोग आराम पसन्द व नियोजित परिवार में विश्वास रखते हैं। साथ ही इस श्रेणी के परिवारों की मुख्य विशेषता इनका शिक्षित एवं तृतीयक आर्थिक क्रियाओं में संलग्न होना है जिसके परिणाम स्वरूप ये भौतिक सुख–सुविधाओं की ओर आकर्षित होकर एकाकी परिवार में रहना अधिक उपयुक्त मानते है।

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र जिला भिण्ड की जनांकिकी के सामाजिक पक्ष को मुख्यतः जाति वर्ग संरचना एवं पारिवारिक स्वरूप प्रभावित करते हैं। यहाँ सर्वाधिक ग्रामीण जाति सामान्य वर्ग की अंकित की गयी है जिससे स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में अधिकाशं सामान्य वर्ग के लोग ग्रामों में कृषि आधारित प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं में संलग्न है। अतः यह वर्ग आज भी सामाजिक मान्यताओं पर विशेष बल देते हैं तथा अपनी जन्म स्थली व पूर्वजों द्वारा प्रदान की गयी अचल सम्पत्ति (कृषि भूमि व आवास) अत्यधिक लगाव रखते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ न्यूनतम जनसंख्या जो कि, अनु.जनजाति की परिलक्षित होती है, वह प्रायः पूर्व से ही न्यूनतम रूप में निवासरत थी साथ ही प्रशासन द्वारा मिलने वाली विभिन्न योजनाओं के लाभ के फलस्वरूप इस वर्ग के अधिकांश लोग शिक्षा एवं रोजगार प्राप्त होने पर नगरों की ओर उन्मुख हो जाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में पारिवारिक स्वरूप पर दृष्टिपात करने पर स्पष्ट होता है कि यहाँ सर्वाधिक ग्रामीण परिवार मिश्रित पारिवारिक इकाई के रूप में निवास करते हैं। सर्वेक्षण एवं अवलोकन के फलस्वरूप ज्ञातव्य है कि, इस प्रकार के मिश्रित परिवारों में पिछडा जाति वर्ग के लोगों की संख्या अधिक है, जबकि एकाकी परिवारों में सामान्य व अशंतः पिछडा वर्ग के लोग निवास करते हैं। पारिवारिक विखण्डन प्रायः अध्ययन क्षेत्र की सम्पत्ति सम्बन्धी विवादों का परिणाम है।

अतः उक्त दोनों ही बिन्दु यहाँ की ग्रामीण जनांकिकी के सामाजिक पक्ष को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *पाण्डेय, राजवली – प्राचीन भारत*
2. *मौर्य, एस. डी. – जनसंख्या भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद (उ.प्र.)*
3. *Aiyar, S.P. 1993 Modernization of Traditional Society, Macmillan India*
4. *सेंगर, के.एस. 1984 अधर चम्बल घाटी (म.प्र.) की अर्थव्यवस्था पर बीहड कृष्यकरण का प्रभाव एक भौगोजिक विश्लेषण, अप्रकाशित शोध प्रबंध जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।*
5. *ओझा, एम.एस. 1981 चम्बल सिंध अधर बेसिन (म.प्र.) एक जैव भौगोलिक विश्लेषण, अप्रकाशित शोध प्रबंध जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।*
6. *गौतम,पी.एस. 1983 ट्रासंपोर्ट ज्योग्रॉफी ऑफ चम्बल डीवीजन अप्रकाशित शोध प्रबंध जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।*